उत्तरआधुनिक अवसरवाद पर

उत्तर तालमेल कमेटी (NCC)
भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

उत्तर आधुनिक अवसरवाद पर

जून, 2026

उत्तर तालमेल कमेटी (NCC)
भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

उत्तर आधुनिक अवसरवाद पर

परिचय- भारतीय क्रांति में भ्रमित निम्न पूंजीपति:

वर्ग समाज के शुरूआत से ही अस्तित्व (सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, जैविक आदि) के विभिन्न पहलुओं में संकट अभिव्यक्त होना शुरू हो जाता है। यह संकट पूंजी के दौर के संस्थानीकरण के साथ ज्यादा बुरा और ज्यादा बार होने लगा। विश्व पूंजीवाद के वर्तमान दौर में संकट एक अविरत परिघटना है। जो दरअसल पूंजीवाद में निहित अंतर्विरोधों का परिणाम है। पूंजीवाद व्यक्तिगत एकाधिकार (मनुष्य के श्रम की उपज पर पूंजीपतियों का कब्जा) और सार्वजनिक उत्पादन (मजदूरों द्वारा सार्वजनिक रूप से उत्पादन करने) के मॉडल पर आधारित है। यह मूलभूत अंतर्विरोध सभी तरह के आधुनिक संकट का कारण है, चाहे वह जहां भी हो- शेयर बाजार, डाटा बाजार, खनन उद्योग, जमीन, औद्योगिक निकाय, अचल संपत्ति बाजार और अन्य पूंजी उत्पादन निकाय जो अर्थव्यवस्था, समाज और व्यक्तियों को संचालित करता है और लोगों की मानसिक और शारीरिक क्षमताओं को आकार देता है। परिणामस्वरूप उत्पादन प्रक्रिया से अलगाव पैदा होता है और सामाजिक व प्राकृतिक ढांचों में मनुष्य की सक्रिय भागीदारी की भूमिका को कम करता है। इसी को अलगाव कहते हैं। कामरेड मार्क्स के अनुसार अलगाव केवल परिणाम में ही नहीं दिखता, बल्कि उत्पादन की प्रक्रिया और उत्पादन की क्रिया में भी दिखता है। मजदूर अपने घर से बाहर काम पर जाते हैं जिसे वे सिर्फ अपनी जरूरतों को पूरा करने के साधन के रूप में देखते हैं। मजदूरों के लिए काम करने की क्रिया उन्हीं के खिलाफ निर्देशित है, जो उससे स्वतंत्र है और उससे जुड़ी हुई नहीं है। इस तरह का अलगाव इंसान को उसकी नस्ल से अलग करने में सफल हुआ है। नस्लीय जीवन, उत्पादन जीवन, जीवन को जन्म देने वाला जीवन- यह सब मजदूर के व्यक्तिगत अस्तित्व को बचाये रखने के महज साधन रह गये हैं और इंसान बाकी इंसानों से अलगाव में चला गया है। अंततः प्रकृति खुद इंसान से अलगाव में चली गई है, जिससे इंसान ने अपना अजैविक शरीर खो दिया है।

उत्पादन प्रक्रिया से जुड़े मनुष्य की यह मानसिक कराह का प्रतिबिंब मध्यम वर्ग में भी मिलता है। भारत में कोरोना संकट के समय लाखों मजदूर और मध्य वर्ग के लोग गांव की तरफ गए। इस महामारी ने समाज में निहित उन दरारों को उघाड़ कर रख दिया जो अन्यथा ऊँचे राजमार्गों, एक्सप्रेसवे और सड़कों से छिपी रहती है। मजदूर वर्ग और मध्यम वर्ग का एक तबका अपने कार्य स्थल से अपने गांव की तरफ चल दिए, जिसमें सैकड़ों लोग मर गए। इस प्रवास का क्या कारण था ? क्या यह सामाजिक अलगाव नहीं था ? एक जगह से अपनेपन की कमी ने उन्हें कमजोर बना दिया। साफ तौर से शहर मजदूरों के लिए नहीं है। उनके लिए शहर गांव के लिए पैसा कमाने का जरिया है। लेकिन शहर मध्य वर्ग से जुड़ी जगह भी नहीं है। मध्य वर्ग के लिए शहर मृगमरीचिका है। मध्य वर्ग शहर के लिए तरसता है लेकिन शहर कभी उसे पूरी तरह से अपनाता नहीं है। मध्य वर्ग का ऊपरी तबका हमेशा शहर के दिखावटी सत्ताधारियों की रिजर्व सेना रह जाता है। मध्य वर्ग के निचले व मध्य तबका जिसके पास या तो नौकरी नहीं है या फिर लगभग 20 घंटे काम करने से बुरी तरह शोषित है, यह बेरोजगार या प्रच्छन्न बेरोजगारी का एक बड़ा तबका है। ये

समाज व पारिवारिक संस्थाओं से अलगाव में रहते हैं, परिवार की उम्मीदें और गांव समाज में सांमती वर्चस्व बनाये रखने की जरूरत इस मध्य वर्ग का गला घोंटता है। अंततः व्यक्ति खुद को ही दोष देता है और परिवार व समाज को खुश न कर पाने की क्षमता से आतंकित होता है। उसकी सभी असफलताओं के लिए वह खुद को दोष देता है। सबसे बुरी स्थिति के लिए खुद को दोष देना ही पूंजी का मूल और सबसे प्राचीन तर्क है। इससे लोगों का गुस्सा पूंजी केंद्रित विश्व व्यवस्था की बजाय अपने ऊपर केंद्रित हो जाता है। जिंदगी में खालीपन और अर्थहीनता का सवाल-बुर्जुआ व्यक्तिवादी नैतिकता का विषय बन जाता है। जिससे एक व्यक्ति को कई तरह की शारीरिक और मानसिक बिमारी होती है। व्यक्ति मदद के लिए कराहता है लेकिन कोई आगे नहीं आता। बुर्जुआ व्यक्तिवादी नैतिकता इस उत्पीड़ित वर्ग का जवाब नहीं है।

मध्य वर्ग की यह अस्थिर प्रवृत्ति समाज में उसके राजनीतिक स्थान के कारण हैं। जो अर्थव्यवस्था में है वो राजनीति में भी प्रतिबिंबित होता है। मध्य वर्ग का एक तबका मजदूर वर्ग के साथ जुड़ता है और उसकी पार्टी से अपना नाता जोड़ता है और इसलिए यह तबका स्थिर रहता है और अपनी मुक्ति की तरफ बढ़ता है। जबकि इसका ऊपरी हिस्सा उदारवादी बुर्जुआ प्रचार से प्रभावित होकर ड्रग्स, सुपरमार्केट, सेक्स से मन बहलाता है। यह तबका शासक वर्ग के प्रचार से इतना अपंग हो चुका है कि इसे धीमे लेकिन लगातार बढ़ रही सर्वहारा वर्ग की कम्युनिस्ट पार्टी में उम्मीद नहीं दिखती और राजनैतिक रूप से निष्पक्ष होने के नाम पर यह शासक वर्गीय पार्टियों के साथ खड़ा हो जाता है। लगातार वैचारिक लचीलेपन का वादा करते हुए यह शासक वर्ग व उसकी पार्टियों की राजनीति व विचारधारा का अनुसरण करता है। लेकिन तब भी कुछ अधूरा पाता है। वह इस अधूरी कड़ी से निर्धारित होता है और कभी शासक वर्ग के साथ पूरी तरह एकीकृत नहीं होता। अस्तित्व के सभी पहलुओं में अनिश्चितता इस वर्ग को परिभाषित करती है। शासक वर्ग के साथ यह एकीकरण चीन में पूंजीवाद की पुर्नस्थापना के साथ मजबूत हुआ था। जब से चीन में अवसरवादी सत्ता में आए, मध्य वर्ग का एक तबका शासक वर्ग के बहुत करीब चला गया और साम्यवाद और उसकी अनिवार्यता के खिलाफ दुष्प्रचार करने लगा। यह मध्यम वर्ग की चरित्र की विशेषता है जो कॉ0 मार्क्स ने लासाल में चिन्हित किया था और जिसके खिलाफ संघर्ष करके कॉ0 लेनिन व कॉ0 माओ ने एक सच्ची बोल्शेविक पार्टी का निर्माण किया था। बुरे दौर में जब हमारा आन्दोलन बहुत कमजोर हो गया था, यही मध्य वर्ग था जो सर्वहारा वर्ग की विचारधारा से सबसे पहले भाग खड़ा हुआ और बुर्जुआ विचारधारा का गुलाम बन गया। यह भागना ही इस वर्ग में क्रांतिकारी उत्साह की कमी और सर्वहारा जीवन जीने की कमी को दर्शाता है। यह अवसरवादी (निम्न पूंजीपति उदार बुद्धिजीवी) बौद्धिक ईमानदारी को भी नहीं मानते, जो अपनी खुद की असफलताओं को समझने के बजाय उस सिद्धांत व राजनीतिक लाईन पर संदेह करने लगते हैं जिसका वे कुछ समय पहले तक अनुसरण कर रहे थे। अंततः वे किसी पुरानी व्यर्थ सिद्धांतों को लेकर आते हैं जिनके माध्यम से वे मालेमा के क्रांतिकारी सिद्धांत पर हमला करते हैं और प्रतिक्रांतिकारी खेमे में शामिल हो जाते है।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में, सांमतवाद व साम्राज्यवाद खास तौर पर ब्राह्मणीय सांमती व्यवस्था ने निम्न पूंजीपति वर्ग को आन्दोलन की ओर धकेल दिया जिसमें वे पितृसत्तात्मक परिवार की रूढ़िवादी, अंधविश्वास, जाति, भाई-भतीजावाद की रूढ़िवादी जकड़ से मुक्ति देख रहे थे। यह वह दौर था जब देशभर में कॉलेजों व विश्वविद्यालयों से निम्न पूंजीपति वर्ग की विशाल आबादी सांमतवाद विरोधी,

साम्राज्यवाद विरोधी आन्दोलन से जुड़ रही थी। निम्न पूंजीपति वर्ग सांमतवाद से आजादी और अपने पसंद की कला व राजनीति चुनने की आजादी की चाह को सर्वहारा की मुक्ति के लिए नवजनवादी क्रांति से होते हुए समाजवाद व अंततः साम्यवाद की जरूरत से जोड़कर देख रहे थे, जिसके फलस्वरूप भारी मात्रा में मध्य वर्ग क्रांतिकारी आन्दोलन में शामिल हो रहा था। परंतु जब क्रांन्तिकारी आन्दोलन कमजोर हुआ, उसके सदस्यों की शहादतें हुई और उसके नियंत्रण के क्षेत्र में गिरावट हुई, तब यह निम्न पूंजीपति वर्ग ही यह दावा करने वाले सबसे पहले थे कि हमारा रास्ता लंबा और थकाऊ है, कि भविष्य अंधकारमय है और केवल विनाश ही दिखाई पड़ रहा है। वे अपना मूल्यांकन अनुभव पर आधारित होकर बनाते हैं, वह भी व्यक्तिगत जीवंत अनुभव।

ऐसे में सैद्धांतिक पक्ष दब जाता है और भुला दिया जाता है और उनके पास केवल हार का अनुभव रह जाता है जिसके आधार पर वे हर उस इंसान को रोकते हैं जो पुराने का पुनर्निर्माण करने की कोशिश कर रहा है। वे क्रांतिकारियों का खेमा छोड़ देते हैं। सिद्धांत को व्यवहार के मार्गदर्शक के तौर पर और एक विज्ञान के तौर पर जिससे किसी भी घटना या आन्दोलन के विकास और जीत को समझा जा सकता है, नकार दिया जाता है। अंततः हमारे पास एक ऐसा वर्ग बच जाता है जो एक तरफ तो वर्तमान शासक वर्ग से अलगाव में है और दूसरी ओर सुकून के लिए क्रान्तिकारी आंदोलन भी छोड़ चुके हैं। ऐसी जिंदगी को चलाने वाली वो चेतना कौन सी होगी ? उनका सुकून किस विचारधारा पर आधारित होगा ? इसका जवाब स्पष्ट है- ऐसी विचारधारा जो दोनो ही छोरों को नकारती है परंतु यह बहुत बारीकी से शासक वर्ग की विचारधारा के प्रभुत्व के लिए जगह बनाती है।

ये सिद्धांत जगह व समय के अनुसार बदलते हैं, कहीं माचिस्ट (Machist), कहीं अम्बेडकरवादी और विकास के क्रम में उत्तर आधुनिक। वर्तमान समय के भारत और विश्व की स्थिति में उत्तर आधुनिक विचारधारा निम्न पूंजीपति के प्रतिक्रियावादी तबके का मार्गदर्शन करता और मजबूत करता है। अवसरवादी अपनी बहसों में फूको जैसे उत्तर आधुनिक बुद्धिजीवियों और प्रतिक्रियावादियों के कथनों का इस्तेमाल करते हैं। लेनिन और माओ के समय के अवसरवादी माचिस्ट (Machist), कंफ्यूचियस के सिद्धांतों के अनुयायी थे। यह बात में कोई अतिश्योक्ति नहीं कि हमारे समय के सभी अवसरवादी उत्तर आधुनिक विचारधारा के अनुयायी हैं।

अवसरवादियों की अनिश्चितता और भौतिक सच का खंडन और उत्तर आधुनिक सिद्धांतकारों का (मेटा-नैरेटिव) भव्य आख्यान अवसरवाद व उत्तर आधुनिक विचारों के बीच एकता का सबसे अच्छा आधार देता है साम्राज्यवादी वित्तीय पंूजी ने उत्तर आधुनिक विचारों के रूप में एक बहुत अच्छा मित्र विकसित किया है। पार्टी के अंदर भी इस मैत्री की दृढ़ता, दो लाइनों का संघर्ष उत्तर आधुनिक विचारों और सोच के खिलाफ संघर्ष करने के आसपास घूमता है। अगस्त 2024 का पी.बी. रेजोल्यूशन उत्तर आधुनिकता को आंदोलन के पीछे हट का एक कारण बताता है। जिससे यह अत्यंत आवश्यक बन जाता है कि हम पार्टी के भीतर उत्तर आधुनिकवाद के प्रभाव को चिन्हित करंे और यह भी चिन्हित करंे कि अवसरवादी को कहां से सैद्धांतिक और राजनैतिक बल मिल रहा है। हमारी पार्टी ने पी.डब्ल्यू. 20 में उत्तर आधुनिकतावाद पर एक लेख निकाला था जिसमें पार्टी ढाँचा और पार्टी साथियों के भीतर उत्तर आधुनिकता के विभिन्न रूझानों को रेखांकित किया है। उस लेख में बताया गया है कि कैसे हमारी पार्टी पर उत्तर आधुनिकवाद का हमला राज्य के बड़े मनोवैज्ञानिक हमले का हिस्सा है। उस लेख में आगे यह

भी बताया गया है कि वैचारिक भूमिका के अलावा उत्तर आधुनिकवाद शासक वर्गों द्वारा सर्वहारा से उसकी पार्टी छीनने का एक राजनैतिक हथियार भी है। आज जब हमारी पार्टी अवसरवाद-विघटनवाद-संशोधनवाद के खिलाफ तीखा वैचारिक राजनैतिक संघर्ष कर रही है, तब मुख्य शासक वर्गीय विचारधाराओं को पहचानना जो अवसरवाद को बनाये रखते हैं बहुत जरूरी हो जाता है।

अनुभवजन्य आलोचना (Empirio-Criticism) और अवसरवादियों के खिलाफ लेनिन का संघर्ष

बीसवीं शताब्दी की शुरूआत दर्शन में अवसरवाद के खिलाफ संघर्ष से हुई। 1908 में बोल्शेविकों के बीच दार्शनिक सवालों पर गंभीर असहमतियां पैदा हुई। कामरेड लेनिन 1906 से ही ए. बोग्दानोव के दार्शनिक मतों की खिलाफत कर रहे थे और उससे पहले से ही वे उन बोल्शेविकों के खिलाफ समझौताहीन पक्ष ले रहे थे। ए. बोग्दानोव, ए. लुनाचासर्की, वी. बजारोव जिन्होंने 'दर्शन में भाववाद और संशोधनवाद पर निबंध' नामक संगोष्ठी में भाववादी विचार रखे। 1905 की क्रांति की हार के बाद उस पतन का प्रतिबिंब है जो उस समय राजनीतिक समाज और राजनीतिक पार्टियों में दिखना शुरू हुआ। लेनिन जिन्होने हमेशा मार्क्सवादी विचारधारा की शुद्धता को खास महत्व दिया है उन्होंने अनुभवजन्य आलोचकों (**Empirio-Criticism**) के खिलाफ और द्वंदात्मक भौतिकवाद के पक्ष में, मार्क्सवाद के दार्शनिक सिद्धांतों के पक्ष में तीखा संघर्ष किया। 1908 में लेनिन ने एक जरूरी दार्शनिक किताब खत्म की-भौतिकवाद और अनुभवजन्य आलोचना (**Empirio-Criticism**) एक प्रतिक्रियावादी दर्शन पर आलोचनात्मक व्याख्या, जो अवसरवाद खास तौर पर विघटनवाद के खिलाफ संघर्ष में कॉ. एंगेल्स की 'एंटी-ड्युरिंग' के बाद दूसरे स्थान पर है।

अनुभवजन्य आलोचना के दर्शन का प्रचार 1890-1910 में हुआ, जिस समय वित्तीय पूंजी दुनियाभर में स्थापित होने के क्रम में थी, और पूंजीवाद साम्राज्यवाद में विकसित हो रहा था। वित्तीय पूंजी का प्रतिक्रियावादी चरित्र राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में स्थापित हो रहा था जिससे मजदूरों में आक्रोश और विशाल आंदोलन मॉस्को और बाकी जगहों पर चल रहे थे। इसके बाद क्रांतिकारी आंदोलन, पार्टी और जनता पर भारी दमन हुआ। कारणवश कई निम्न पूंजीपति बुद्धिजीवियों ने पार्टी छोड़ दी। दर्शनशास्त्र में इस छोड़ने का कारण प्रतिक्रियावादी अनुभवजन्य आलोचना (**Empirio-Criticism**) चिन्हित किया गया। इस समय कॉ. लेनिन ने दो मोर्चे खोले। पहला, राजनीतिक मोर्चा जिसमें 1908-1917 के दौरान लेनिन ने उन विघटनवादियों और अवसरवादियों के खिलाफ कई लेख लिखे, जो पार्टी को खुला, कानूनी, ढीला ढ़ाँचा बनाना चाहते थे। और दूसरा मोर्चा दर्शनशास्त्र के पक्ष में अत्यंत जरूरत को पूरा करने के लिए खोला जहाँ उन्होंने (**Empirio Critical School**) को हराया। अनुभवजन्य आलोचना (**Empirio-Criticism**) स्कूल का तर्क अवसरवाद का तत्व था। इसको समझते हुए कॉ. लेनिन ने अपनी किताब में इसको लगभग ध्वस्त कर दिया। नीचे हम अवसरवाद और अनुभवजन्य आलोचना (**Empirio-Criticism**) के बीच में एक तुलनात्मक व्याख्या दे रहे हैं जिससे हम उस समय के अवसरवादियों द्वारा उठाए गए राजनीतिक सवालों के दार्शनिक मकसद को समझ सकते हैं और इनमें से कई सवाल आज के अवसरवादियों से मेल खाते हैं जिनके खिलाफ हमारी पार्टी संघर्ष कर रही है।

	अनुभवजन्य आलोचना (Empirio-Criticism)	**अवसरवाद**
अनुभव पर	मनोगतवादी भाववाद: एक व्यक्ति जो महसूस (Sensation) करता है, वो प्रधान है.	मनोगतवादी भाववादी:- जिसके कारण वे आन्दोलन में अपने खुद के अनुभव को महत्व देते हैं और सिद्धांत के महत्व को पथ प्रदर्शक के तौर पर मानने से इंकार करते हैं। वे इंसान की भूमिका और भावनाओं को राजनीति केंद्र में रखते हैं।
भौतिक सच पर	कोई भौतिक सच नहीं है। सच इंसानी अनुभव का सांगठनिक स्वरूप है।	सच हमेशा सापेक्ष होता है और इसलिए सर्शत होता है। कोई परम सत्य नहीं हो सकता।
गैर पक्षीय	अपने आपको निष्पक्ष दिखाने की कोशिश करते हैं। जो न तो भाववादी हो, न भौतिकवादी। जबकि अंतर्वस्तु में वे मनोगतवादी भाववादी है।	कभी अपनी राजनीतिक लाइन को स्पष्टता के साथ नहीं रखते। रीढ़विहीन सांप की तरह इधर-उधर मुड़ते रहते हैं। 2 मेज पर बैठने के सिद्धांत से चलते हैं।
कारण और परिणाम पर	प्रकृति में कोई कारण (नियम) या अनुशासन (क्रम) नहीं होता। वह हमारा मनोगत अनुभव है जो भाषा में प्रतिबिंबित होता है।	किसी परिणाम के पीछे कई सारे कारक होते हैं इसलिए किसी एक कारण को ढूंढ़ना गलत है।

अवसरवादी और अनुभववादी आलोचक (Empirio-Critical) दोनो ही परम सत्य (Absolute Truth) के होने को खारिज करते हैं। यह उनके वर्ग हित में है कि सच को अस्पष्ट और अपरिभाषित रखें ताकि वे उन कथनों को माने जो उनके लिए सबसे अनुकूल है-यह अवसरवाद का मूल लक्षण है, वे दो स्टूल पर बैठते हैं, यह सापेक्षता अनुभवजन्य आलोचना (Empirio-Criticism)में समझाया गया है। लेनिन समझाते हैं कि एक कम्युनिस्ट को इस सवाल पर क्या दृष्टिकोण रखना चाहिए। वे बोलते हैं ''एक शब्द में कहें तो सभी विचारधारा ऐतिहासिक रूप से पोषित हैं लेकिन यह भी सशर्त सत्य है कि हर वैज्ञानिक विचारधारा (उदाहरण के तौर पर धार्मिक विचारधारा से अलग) के अनुरूप एक वस्तुगत सच

होता है, जो परम होता है। तुम बोलोगे कि परम सत्य और सापेक्ष सत्य के बीच का यह अंतर अनिश्चित है और मैं यह प्रत्युउत्तर दूंगा: हाँ, यह प्रयाप्त मात्रा में ''अनिश्चित'' है कि विज्ञान को एक जड़सूत्र (बुरे अर्थ में) न बनने दें, मृत, जमा हुआ न बनने दें, लेकिन उसके साथ ही यह प्रयाप्त मात्रा में ''निश्चित'' है कि यह हमें सक्षम बनाए कि हम दृढ़ और अखण्डनीय तरीके से अज्ञेयवाद, आस्थावाद से, दार्शनिक भाववाद और ह्यूम और कांट के अनुनायियों की कुतार्किकता से अपने आप को अलग कर सके।'' परम सत्य का खण्डन आज तक भी अवसरवादियों का लक्षण रहा है। जब हर सवाल या मुद्दे को सापेक्षता में गढ़ा जाता है, अवसरवाद बच निकलने का और अपने अनुकूल चुनने का सबसे अच्छा तरीका ढूँढ़ निकालता है। (UG) भूमिगत या ओपन (खुला) होना उनके लिए सापेक्ष सिद्धांत है, एक अनुशासित पार्टी का निर्माण भी एक सापेक्ष सिद्धांत है। सापेक्षता के साथ एक बहाना मिल जाता है वे चीजें न करने का जो उनसे उम्मीद की जाती है, साथ ही जब कोई चीज सापेक्ष होती है तब कोई भी आप पर लाईन से भटकाव का इल्जाम नहीं लगा सकता। परम सत्य का खण्डन इतना प्रिय है अवसरवादियों को। यह उस तरह है कि बोल्शेविकों द्वारा हमले जैसी महामारी के समय अवसरवादियों को इम्पीरियो क्रिटीकल स्कूल (**Empirio Critical School**) ने आक्सीजन का सिलेंड़र दे दिया हो।

अनुभवजन्य आलोचना के दर्शन का एक और चिंताजनक लक्षण है कि यह एक व्यक्ति को विश्लेषण की वस्तु और विषय दोनों बना देता है। इस तरह के घोर व्यक्तिवाद के कारण मनोगतवादी और गैर वैज्ञानिक भावनाएं और व्यवहार में परिकल्पना को जन्म देता है। निम्न पूंजीपति वर्ग जो सर्वहारा के आन्दोलनों की हार से डर जाता है। इतना साहस नहीं जुटा पाता है कि उस विचारधारा पर चल सके जो संयम और साहस की मांग करता है और अंततः उस दर्शन में राहत पाता है जो पक्ष लेने की जरूरत को खारिज करता है और कपटी होने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह व्यक्तिवाद को बढ़ावा देता है। यह दावा करते हुए कि व्यक्तिगत भावनाएं सच के घटक के बतौर व्यक्तिगत भावनांए तर्क से ज्यादा महत्वपूर्ण हैं। तर्क के माध्यम से इंसान सर्वहारा की मुक्ति से जुड़ता है लेकिन जो भावनाओं को ज्यादा महत्व देगा तो वह खुद की जरूरतों तक ही सीमित रहने के तरीके ढूंढ़ेगा। यह इम्पीरियो क्रिटिकल स्कूल (**Empirio Critical School**) की बुर्जुआ नैतिकता है। इम्पीरियो क्रिटिकल विचारों ने साम्यवादी आन्दोलन के भीतर अवसरवाद को जन्म दिया और मजबूती दी। लेकिन दुनिया को दहला देने वाली अक्टूबर क्रांति ने इम्पीरियो क्रिटीसिजम की सारी उम्मीदों को चकनाचूर कर दिया और लेनिनवाद को स्थापित किया। रूसी क्रांति के बाद चीन ने भी मार्क्सवाद-लेनिनवाद द्वारा दिखाए रास्ते का अनुसरण किया और कॉमरेड माओ के नेतृत्व में 1949 में चीन में क्रांति को सफल बनाया और मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद मार्क्सवाद-लेनिनवाद के नए और विकसित रूप के तौर पर स्थापित किया। अतः आधी दुनिया लाल हो गई। यह साम्राज्यवादी शक्तियों पर तबाही की मार थी। अपने आप को पुर्ननिर्माण करने के लिए उन्हें दो मोर्चो पर पुनः समायोजन (Re-adjustment) करने की जरूरत थी- एक राजनीतिक अर्थशास्त्र और दूसरा वैचारिक मोर्चे पर। राजनीतिक अर्थशास्त्र में समायोजन रीगन थैचर योजना के रूप में था जिसे नवउदारवादी नीति कहा गया। वैचारिक स्तर पर उत्तर आधुनिकतावाद एक नया औजार बन गया, वह भी नया था नवअनुभववादी आलोचना। यह उन्होंने विश्वविद्यालयों में कम्युनिस्ट प्रभाव को रोकने की रणनीति से किया जिसमें उन्होंने गैर कम्युनिस्ट वाम को बढ़ावा दिया जो दरअसल आज के समय के

अनुभववादी आलोचक थे, जो मूल रूप से मार्क्सवाद के आसपास स्थित उत्तर आधुनिक सिद्धांतकार कभी-कभार वे अपने आपको नव-वाम या उग्र वाम या नव मार्क्सवादी कहते थे।

यूरोपीय संस्थानों में मार्क्सवाद-लेनिनवाद का भारी प्रभाव देखते हुए अमेरिकी साम्राज्यवादी शक्तियों ने *CIA* को यह काम नियुक्त किया कि कम्युनिस्ट प्रचार यूरोपीय विश्वविद्यालयों तक न पहुंचे और इसके लिए विभिन्न अकादमियों और विभिन्न देशों से विशेषज्ञों को लेकर *CIA* की एक विशेष टीम बनाई गई। उन्होंने एक रणनीति बनाई जिसके तहत उन्हें सभी गैर कम्युनिस्ट वाम बुद्धिजीवियों को एकीकृत करना था जो कम्युनिस्ट बुद्धिजीवियों की जगह ले सकें। ये गैर कम्युनिस्ट वाम बुद्धिजीवी *CIA* द्वारा पोषित थे और उन्हें साम्यवाद और मार्क्सवाद खासकर के चीन व सोवियत रूस में चल रही व्यवस्था के खिलाफ निंदापूर्ण लेख और व्याख्यान लिखने की जिम्मेदारी मिली थी। जिस थीसिस ने गैर कम्युनिस्ट वाम की इस लामबंदी को सजीव किया, उसे चिप बोहलेन (Chip Bohlen), इसाइह बर्लिन (Isaiah Berlin), निकोलस नबोकोव (Nicolas Nabokov), अवेरेल हैरीमन (Averell Harriman) और जॉर्ज केनन (George Kennan) ने उत्साहपूर्वक समर्थन दिया। इस टीम को अधिनायकवाद (totalitarianism) से संघर्ष करने का काम सौंपा गया था। इस टीम को गोपनीय रखना था और इसके सदस्यों को सामुहिक कार्यभारों के साथ-साथ व्यक्तिगत कार्यभार भी सौंपें गए.

राजनीतिक अर्थशास्त्र के मोर्चे पर साम्राज्यवादी शक्तियां दोबारा संकट में फंस गई। वित्तीय पूँजी में बढ़ोत्तरी हुई और वह कुछ ही हाथों में सुदृढ़ हो गई। बैंक और शक्तिशाली हो गए और उपभोक्ता के पास लोन वापस करने लायक पैसे नहीं बचे। जैसे-जैसे अर्थव्यवस्था में यह संकट बढ़ा, दुनिया भर में राजनीतिक उथल-पुथल और जनांदोलन शुरू हो गए। 1960 का दशक दुनिया भर में क्रांतियों का दशक बन गया। उस समय विश्व साम्राज्यवादी क्रांति ज्यादा पास नजर आ रही थी। परन्तु रूस में कॉमरेड स्तालिन के बाद आए ख्रुश्चेव और चीन में कॉ माओ के बाद आए डेंग की संशोधनवादी नेतृत्व की गद्दारी से विश्व सर्वहारा वर्ग गहरे अवसरवाद में चला गया। निम्न पूँजीपति वर्ग ने भी अपनी उम्मीदें खो दी। ऐसे समय में जब विश्व सर्वहारा शक्ति के पास कोई राज्य सत्ता नहीं थी, साम्राज्यवादी बुर्जुआ ने तथाकथित गैर कम्युनिस्ट वाम विचारधाराओं को प्रोत्साहित किया जो मूलतः नवअनुभववादी आलोचना थी और यह विचारधारा उत्तर आधुनिकता कहलाने लगी। अवसाद ग्रस्त निम्न पूंजीपति वर्ग शासक वर्ग की उत्तर आधुनिकवादी विचारधारा से रूमानी तौर से आकर्षित हुआ। उत्तर आधुनिकतावाद कला, साहित्य, आर्किटेक्चर से लेकर सेक्स और खाने तक हर जगह अपनी छाप छोड़े हुए है। साम्यवाद के खिलाफ साम्राज्यवादी शक्तियों का प्रचार तंत्र इतना मजबूत था। गैर कम्युनिस्ट वाम बुद्धिजीवियों की टीम और उनके बॉस सीआईए ने बहुत बेहतरीन काम किया और परिणामतः विश्वविद्यालय कैंपसों में उत्तर आधुनिकवाद की ठोस पकड़ स्थापित हो गई।

उत्तर आधुनिक अवसरवादी और कम्युनिस्ट पार्टी

कॉ माओ ने कहा था कि पार्टी सबसे महत्वपूर्ण और प्रधान औजार है जो (जनता की मुक्ति के लिए) जन सेना और संयुक्त मोर्चा को स्थापित करेगी। उन्होंने यह भी कहा था कि पार्टी एकता केवल वैचारिक स्पष्टता से स्थापित हो सकती है। कॉ माओ ने कहा था-''इस आधार पर हमारी पार्टी बेहतर ढ़ंग से

एकीकृत हो सकती है, यानि कि विचारधारा, राजनीति और तमाम नीतियों की आम समझदारी के आधार पर।'' पार्टी में वैचारिक केन्द्रियता के बिना उस पार्टी को कम्युनिस्ट पार्टी नहीं बोल सकते। यह उत्साह हर उस संगठनकर्ता का होना चाहिए जो पार्टी निर्माण करना चाहते हैं। एक पार्टी संगठनकर्ता के लिए विचारधारा हमेशा पहले स्थान पर होनी चाहिए। एक पार्टी संगठनकर्ता अपने सभी कामों में से वैचारिक काम को सबसे पहली प्राथमिकता देता है। हमारी पार्टी के परिप्रेक्ष्य में, वैचारिक मोर्चे पर काम का महत्व बढ़ गया है। क्योंकि एक तरफ तो हम अपने पार्टी नेतृत्व पर सबसे घातक हमले का सामना कर रहे हैं, तो दूसरी तरफ अवसरवादी-विघटनवादी-संशोधनवादी तत्व पार्टी को एक अर्थहीन अंग में बदलने की कोशिश कर रहे हैं जो शासक वर्ग के लिए अनुकूल हो। यदि हम पार्टी को बचाना चाहते हैं, यदि हम शोषित जनता को हत्यारी दलाल सांमती फासीवादी हमलों से बचाना चाहते हैं तब हमारे पास एकमात्र सहारा है मालेमा। हमें अपने अंदर से सभी गैर मार्क्सवादी विचारधारा और व्यवहार को जड़ से निकालना होगा। यदि हम अपनी विचारधारा को पकड़े रहेंगे तो आज नहीं तो कल हम कामयाब जरूर होंगें, लेकिन यदि हमारे वैचारिक मोर्चे पर संघर्ष में एक क्षण भी ढीलापन होगा, तब हम उस सबकी तबाही को आमंत्रित करेंगे जो हमारे शहीदों ने अपने खून के बदले हासिल किया है।

हमें यह याद रखना होगा कि दक्षिणपंथी अवसरवाद हमारे सामने मुख्य खतरा है। हमारे सीसी-पीबी ने भी दक्षिणपंथी भटकाव को पीछेहट के कारणों में से एक बताया है। लेकिन अवसरवादी तबके में कुछ लोग इस बात की रट लगाए हुए हैं कि वामपंथी अवसरवाद भी पार्टी के लिए उतना ही खतरनाक है। वामपंथी अवसरवाद पर यह जोर सच्ची मार्क्सवादी लाइन पर उनके हमले को छुपाने के लिए है। क्योंकि वे इतने दक्षिण में खिसक गए हैं कि सही मार्क्सवादी लाईन उन्हें वाम लग रही है। इस सन्दर्भ में कॉ माओ ने ''चीजें बदलना शुरू हो रही हैं'' नामक लेख में कहा है ''ऐसे कई लोग हैं जिनकी गलत सोच संशोधनवाद या दक्षिणपंथी अवसरवाद की तरफ जाती है। वे ज्यादा बड़ा खतरा हैं क्योंकि उनके विचार पार्टी में बुर्जुआ विचारधारा का प्रतिबिंब है। और वे बुर्जुआ उदारतावाद के लिए उत्सुक रहते हैं, हर चीज का खण्डन करते हैं और एक सौ तरिकों से पार्टी के बाहर के बुर्जुआ बुद्धिजीवियों से जुड़े हैं।

पिछले कुछ महीनों में लोग जड़सुत्रवाद की आलोचना कर रहे हैं लेकिन संशोधनवाद को चुनौती नहीं दे रहे हैं। जड़सूत्रवाद की आलोचना होनी चाहिए, वरना बहुत सारी गलतियां सुधर नहीं पायेंगी। अब समय आ गया है कि हम अपना ध्यान संशोधनवाद की आलोचना करने में लगायें।'' जड़सूत्रवाद पार्टी में निम्न पूंजीपति विचारधारा का प्रतिबिंब है और दक्षिणपंथी अवसरवाद पूरी तरह से बुर्जुआ विचारधारा है। हालांकि वामपंथी अवसरवाद या जड़सूत्रवाद खतरनाक है और तुरंत ही ठीक किया जाना चाहिए, लेकिन मौजूदा परिस्थिति में जब देश या दुनिया के स्तर पर कोई वामपंथी भटकाव की राजनीतिक शक्ति नहीं है, ऐसे में इसका प्रभाव बहुत ही कम है। वामपंथी जड़सूत्रवाद की बात ज्यादातर दक्षिणपंथी अवसरवादियों की तरफ से आती है जो सही मार्क्सवादी लाईन पर हमला करना चाहते हैं। हमारे सामने आज असली दूश्मन अवसरवादी-विघटनवादी-संशोधनवादी है। मुख्य खतरों को पहचानने के बाद हमें पार्टी के अंदर उसकी अभिव्यक्ति को रेखांकित करना चाहिए। दक्षिण अवसरवादी रूझान या भटकाव इन तरिकों में प्रतिबिंबित होता है:-

1. भूमिगत जिंदगी और हथियारबंद संघर्ष का रास्ता छोड़कर पार्टी को कानूनी और खुला बनाने की कोशिश करना। वे इसको भूमिगत पद्धति पर संदेह उठाकर और यह बोलकर करते हैं कि शायद

खुला काम भी बहुत महत्वपूर्ण है और भूमिगत काम के बराबर का महत्व रखता है। वे कहते हैं कि परिस्थितियां बदल गई है, राज्य मजबूत हो गया है। इसलिए हमें काम के पुराने तरीकों पर गंभीरता से सोचना होगा। (यहां यह चिन्हित करना जरूरी है कि उन्होंने न तो यह कहा है कि भूमिगत छोड़ देना चाहिए न ही उन्होंने यह कहा है कि बदली हुई परिस्थिति में भूमिगत जिंदगी और हथियारबंद संघर्ष सम्भव नहीं है।)

2. वे जनवादी केन्द्रियता के पार्टी उसूल में (केंन्द्रियता की ज्यादा महत्वपूर्ण भूमिका को ताक पर रख कर) जनवाद को ज्यादा महत्व देते हैं। जनवाद के नाम पर वे ऊपरी कमेटी की लोकल कमेटी लेवल पर पार्टी लाइन को लागू करने की ताकत को छीनना चाहते हैं। वे कहते हैं कि ऊपरी कमेटी का अनुसरण करेंगे परंतु उन्हें किसी भी निर्णय लेने से पहले हमसे पूछना चाहिए और वे इसे ऊपरी कमेटी से तालमेल न करने के बहाने के तौर पर इस्तेमाल करते हैं। वे शहीद कॉमरेडों के नाम पर यह कसम खाते हैं कि वे पार्टी के साथ हैं और केवल ऊपरी कमेटी की मनमानी के खिलाफ है। वे कहते हैं कि वे केंद्रीय कमेटी का अनुसरण करते हैं, लेकिन इधर की ऊपरी कमेटी अनुशरण किए जाने के योग्य नहीं है।
3. वे भाषा, शब्द, अक्षर, अल्पविराम, आदि पर ज्यादा जोर देते हैं ताकि इससे वे ऊपरी कमेटी और निचली कमेटी या कैडर के बीच सत्ता/ताकत के अंतर को ढूंढ सके। वे कहते हैं कि अंर्तवस्तु में कोई पत्र या कोई भी कही गई बात ठीक है लेकिन भाषा के तरीका में बहुत दिक्कत है, वह मनोगतवादी, तानाशाहीपूर्ण है। अतः पूरी चर्चा को वे भाषा की ताकत और उसके अंदर निहित तानाशाही की तरफ मोड़ देते हैं।
4. वे किसी भी ढ़ाचे से घृणा करते हैं। वे कोई ढाँचा नहीं बनाते और यदि कोई ढाँचा है, तो वे ऊपरी कमेटी से तालमेल न करके उस ढाँचे को जानबूझकर बिना प्राधिकरण के और रीढ़विहीन रखते हैं। जब इसपर उनसे पूछा जाता है तब वे कहते हैं कि जब किसी मामले को यदाकदा सुलझाया जा सकता है तब औपचारिक मीटिंग और ऊपरी कमेटी को रिपोर्टिंग की क्या जरूरत है। वे कहते है काम होना जरूरी है, ढाँचा है या नहीं यह गौण पहलू है।
5. वे जेंडर और यौनिकता के मामले में पार्टी के मत की खिलाफत करते हैं, वे खुले प्यार और खुले सेक्स के समर्थक हैं। वे यौनिक अराजकतावाद के समर्थक हैं। वे कहते हैं कि यौनिक अवसरवाद और LGBT सवाल पर पार्टी का मत सांमती और पितृसत्तात्मक है। ऊपर बताए गए मुद्दों पर दक्षिणपंथी अवसरवादी मतों को देखने के बाद अब हम देखेंगें कि इन पर उत्तर आधुनिक सिद्धांतकारों का क्या कहना है। दक्षिणपंथी अवसरवादियों द्वारा उठाया गया पहला बिंदु बटलर (Butler) के प्रवाह (Flux) के सिद्धांत से जुड़ा है जो उसने फूको (Foucault) से उधार लिया है, कई उत्तर आधुनिक सिद्धांतकारों ने इस पर लिखा है। मुमकिन ही, यह उत्तर आधुनिकतावाद की आधारशिला है। जितनी ज्यादा गतिशीलता होगी, उतना ही मुश्किल होगा उनके स्थान का पता लगाना और उतना ही ज्यादा असमर्थता होगी उसे परिभाषित और स्थिर करने की। यह स्थिति ठोस ढाँचे जैसी विशेषता को कमजोर करेगी, यह अव्यवस्था और अनियमितता को जन्म देगी। उत्तर आधुनिक दर्शन के लिए बदलाव एक निरंतर प्रवाह है। जिसके कोई चरण या कोई छलांग या सीमा नहीं है। बदलाव का मतलब अनियमितता और स्थिरता है।

बदलाव की समझ के इस तर्क से दक्षिणपंथी अवसरवादी कहते हैं कि चूँकि समाज बदल गया है, राज्य ज्यादा शक्तिशाली बन गया है इसलिए उसके अनुसार हमें भी बदलना होगा और हथियारबंद संघर्ष को त्यागना होगा। यह समझदारी बदलाव के अनियमितता पर आधारित है। यहीं बटलर के सिद्धांत में प्रवाह का मतलब है, बदलाव लगातार बहने वाला और स्थाई है, लेकिन एक माओवादी के लिए बदलाव मात्रात्मक से गुणात्मक में बदलने से आता है और वह भी चरण में और छलांग लगा कर आता है। हर तरह का बदलाव भारतीय क्रांति की रणनीति में बदलाव नहीं लाएगा। केवल मात्रात्मक बदलाव समाज में गुणात्मक बदलाव नहीं लाएगा। उसके लिए छलांग होना आवश्यक है। यह छलांग चरणों में होता है। इन चरणों और छलांग का अध्ययन किये बिना बदलाव की रट लगाए रखना बदलाव का उत्तर आधुनिक दर्शन के अलावा और कुछ नहीं। किसी को भी बदलाव के विचार से किंकर्तव्यविमूढ़ नहीं होना चाहिए, किसी भी तरह के बदलाव को द्वंदात्मक और ऐतिहासिक भौतिकवाद के माध्यम से समझना चाहिए जो कॉमरेड मार्क्स, कॉमरेड लेनिन, कॉमरेड माओ ने हमें सिखाया है। किसी भी प्रक्रिया के चरण होंगें और इन चरणों के अध्ययन से बदलाव की प्रकृति को और भविष्य में उसके संभावित अंर्तवस्तु और स्वरूप को बताया जा सकता है। क्या इन अवसरवादियों ने कभी इतना साहस किया है कि उस छलांग का और उस चरण का सैद्धांतिकरण कर सकें जिस पर वे समाज के पहुंचने का दावा करते हैं ? नहीं, उन्होंने अपने दावों के समर्थन में कोई विश्लेषण नहीं किया है, उन्होंने केवल कचरे साम्राज्यवादी उत्तर आधुनिक दर्शन के तेज प्रवाह में बहने का काम किया है।

दूसरा मामला फूको के सत्ता की धारणा से जुड़ा है। फूको ने कहा था कि सत्ता अपनी अंर्तवस्तु में उत्पीड़क है और हर जगह है। इसलिए इस सत्ता को खत्म करने के लिए हर तरह के मतभेद का जश्न मनाया जाता है। ज्यादातर यह विरोधी संलाप (Counter Discourse) के रूप में आता है, चाहे वह अतार्किक, बेबुनियाद, बेमतलब ही क्यों न हो, उसे समर्थन देना चाहिए और जश्न मनाना चाहिए। अतः दक्षिणपंथी अवसरवादी जो किसी भी कारणवश ऊपरी कमेटी के प्राधिकरण को नहीं मानते, दरअसल फूको के सिद्धांत से संचालित है कि सभी तरह की सत्ता अपने अंर्तवस्तु में उत्पीड़क है। जो साथी इस अनुशासनहीनता को समझने के बजाय इन दक्षिणपंथी अवसरवादियों का ऊपरी कमेटी से मतभेद का जश्न मनाते हैं, इसी प्राधिकरण विरोधी रूझान से संचालित हैं। वे मानते हैं कि अपने ऊपर की सत्ता का उल्लंघन करना प्रगतिशीलता है। इसमें समस्या प्राधिकरण विरोधी धारणा के कारण है जो प्रत्यक्ष रूप से सत्ता की उत्तर आधुनिक समझदारी से आता है। कोई सीसी को मानता है, यह दावा करना नाममात्र है क्योंकि यह पता है कि सीसी प्रत्यक्ष तौर पर देखने वाला अंग नहीं होगा, अतः अवसरवादी भाषा इस्तेमाल करके ऊपरी कमेटी के प्राधिकरण को छुपाते हैं। उन मामलों में जहाँ सीसी प्रत्यक्ष तौर पर देखने लगती है, ये अवसरवादी दावा करते हैं कि सीसी भी ऊपरी कमेटी के रास्ते पर चल रही है या सीसी ऊपरी कमेटी से भी ज्यादा जड़सूत्रवादी हो गई है।

अनुभववाद (Phenomenology) और अस्तित्ववाद (Existentialism) का दर्शन हमारे अवसरवादियों के लिए पथ-प्रदर्शक हैं। वे मूलतः अनुभववादी हैं और उग्र बुर्जुआ स्वतंत्रता और 'चुनने की आजादी' के लिए संघर्ष करते हैं। साम्यवादी होने के बहाने के पीछे वे बुर्जुआ स्वायत्ता (Autonomy) के लिए और अपनी राजनीतिक लाईन को लागू करने के अधिकार के लिए संघर्ष करते हैं। उदार बुर्जुआ

का ‘अतिजनवाद‘ उत्तर आधुनिक काल की ‘उग्र आजादी‘ है। जहां अतिजनवाद अराजकता का लक्षण है, उग्र आजादी ढाँचे के अंदर या बाहर की सत्ता के खण्डन के सिद्धांत पर आधारित है। जब दक्षिणपंथी अवसरवादी ऊपरी कमेटी के प्राधिकरण को नहीं मानते हैं, तब वे सर्वहारा की सत्ता का खण्डन करना चाहते हैं। लेकिन क्या यह अवसरवादी राज्यसत्ता की सांमती बुर्जुआ सत्ता का खण्डन करने का साहस करेगा ?

उत्तर आधुनिकता का हमारे समाज में बहुत बड़ा असर है, जैसे-जैसे मध्य वर्ग की संख्या बढ़ रही है, जनता पर उत्तर आधुनिकतावाद की पकड़ भी बढ़ रही है। उत्तर आधुनिकतावाद के रुप में दुश्मन को अपना सबसे कारगर हथियार मिल गया है। पहले उनका हथियार बुर्जुआ कल्याणकारिता था परंतु उत्तर आधुनिकता ने जो जादू की छड़ी चलाई है, वह और किसी विचारधारा द्वारा नहीं किया जा सकता। साम्राज्यवादी नवउदारवादी विश्व व्यवस्था को व्यापक उपभोग की जरूरत है। व्यापक उपभोग को क्रेडिट व्यवस्था और बाजार अर्थव्यवस्था के डिजिटलीकरण द्वारा सुगम बनाया गया। इससे उपभोग ज्यादा से ज्यादा एक निजी अभ्यास का मामला बन गया जो व्यक्तिगत इच्छा, व्यक्तिगत पंसद और नापसंद पर आधारित है। उत्तर आधुनिकवाद पूरी तरह नव उदारवादी विश्व प्रणाली से जुड़ा हुआ है। जिस तरह की तरलता (Fluidity) और अनियमितता वित्तीय पूंजी बाजार में है, वह उनके दर्शन में भी है। आज के बाजार की भौतिक परिस्थिति घोर व्यक्तिवाद को बढावा देता है। एक व्यक्ति को निजी बाजार की जगहें (अमेज़न, फ्लिपकार्ट, आदि के रूप में) निजी ‘विश लिस्ट‘ प्रदान की गई है। जब किसी को लोन लेने, क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल करने, गेम खेलने या कोई ऐप को डाउनलोड करने के लिए कहा जाता है आदि के जरिए पैसे की सीमा को भी पार करने का प्रलोभन दिया जाता है। लेकिन वास्तविकता में इस मुखौटे के पीछे कुछ भी निजी नहीं रहता, सभी चीजें साम्राज्यवादी पूंजी और उसकी नवउदारवादी जरूरतों के तर्क से गढी गयी हैं। आजादी और चयन के इस मिथ्य द्वारा बाजार की वैचारिक मशीनें संचालित होती हैं। यह काल्पनिक आजादी और चुनने का अधिकार राजनीति में भी दिखता है।

दक्षिणपंथी अवसरवादियों द्वारा ऊपरी कमेटी के प्राधिकरण का खण्डन करने की भौतिकता डिजिटल बाजार अर्थव्यवस्था पर टिकी है जिसे साम्राज्यवादी वित्तीय पूंजी ने पैदा किया है। यह बाजार व्यक्तिगत चयन और उग्र आजादी के मिथ्य को बनाता है लेकिन एक निम्न पूंजीपति की कल्पना में जनवादी केंद्रियता का सिद्धांत उसे दासता लगता है क्योंकि यह विचारधारा और समूह के प्रति प्रतिबद्धता की माँग करता है। अतः वे अपना हमला जनवादी केंद्रीयता में केंद्रीयता वाले हिस्से से शुरू करते हैं। वे जनवादी केंद्रीयता के सिद्धांत को विकृत करके यह निष्कर्ष निकालते हैं कि जनवाद ही इसमें सारतत्व है और हर मामले और हर समय में इसको ही प्रधान होना होगा। वे केंद्रियता को सत्ता के रूप में देखते हैं और उनकी सत्ता की धारणा वहीं है जो फूको की थी जो बोलता था कि सभी तरह की सत्ता मूलतः उत्पीड़क होती है। यहां यह याद करना जरूरी है कि कॉमरेड माओ ने अपने लेख ‘‘पार्टी की कार्यपद्धति में सुधार करो‘‘ में जनवादी केंद्रीयता पर ठोस पक्ष लिया है। स्वतंत्रता खोजियों के खिलाफ बोलते हुए उन्होंने कहा है ‘‘वे पार्टी में जनवादी केंद्रीयता की व्यवस्था को नहीं समझते, वे इसका एहसास नहीं करते कि कम्युनिस्ट पार्टी को केवल जनवाद ही नहीं परन्तु केंद्रीयता की उससे भी ज्यादा जरूरत है। वे जनवादी केंद्रीयता की पद्धति को भूल जाते हैं जिसमें अल्पमत बहुमत के मातहत है, निचली कमेटी ऊपरी कमेटी के मातहत है, एक हिस्सा पूरे के मातहत है और सभी सदस्य केंद्रीय कमेटी के मातहत हैं।

चांग कुओ-ताओ ने दृढ़तापूर्वक केद्रीय कमेटी से अपनी स्वतंत्रता को रखा और परिणामतः 'दृढतापूर्वक' पार्टी से गद्दारी की और एक कोंमितांग एजेंट बन गया।''

अवसरवादियों के पास एक बहुत धूर्त तर्क होता है किसी अंतरविरोध के दोनों पहलुओं से खेलने का, यह उन्होंने बर्नस्टीन से लारिन, मार्टोव के समय तक किया है और आज देवजी, वेणुगोपाल जैसे लोग इस सन्दर्भ में महारत हासिल कर रहे हैं। वे कहते हैं ''किसी भी अंतरविरोध के दो पहलु होते हैं; अतः किसी को भी दोनों पहलुओं को ध्यान में रखना चाहिए और किसी भी वस्तु, प्रक्रिया, घटना के विकास के बारे में नतीजे तक पहुंचने के लिए, हमें किसी एक पहलु को ज्यादा तरजीह नहीं देना चाहिए।'' कॉ लेनिन ने इसे 'दो स्टूल पर बैठना' कहा था। इस बात को हाथों हाथ लेंगें तो यह सही लगेगा लेकिन हम इसी धूर्तता की बात कर रहे हैं जो अनुभवजन्य-आलोचना से तेज होकर वास्तविकता और पक्ष लेने को खारिज करते हैं। मौजूदा समय में यह फूको, देरिदा, बटलर और उनकी तरह उत्तर आधुनिक तर्कों के अवसरवादी दर्शन में और भी ज्यादा धंस गया है, जो कहते हैं कि किसी वस्तु की पहचान की स्थिरता और निर्धारण करना वाद-विवाद की सत्ता बनाना है और अपनी प्रकृति में उत्पीड़क है, इसलिए अवसरवादी किसी अंतरविरोध के प्रधान पहलु को निर्धारित नहीं करते हैं। अवसरवादियों का यह कथन पहचान के सिद्धांत का खण्डन करता है और हमें अनियमितता एवं तरल उत्तर आधुनिक काल्पनिक दुनिया में ला देता है, यह किसी वस्तु के विकास के क्रम में द्वंद्वात्मक और ऐतिहासिक भौतिकवाद को नकारता है। यह सच है कि किसी भी अंतरविरोध के दो पहलु होंगे लेकिन किसी वस्तु के विकास को कौन संचालित करेगा इससे जुडा है कि दोनों में से कौन सा पहलू प्रधान है। इसी को कॉमरेड माओ ने 'प्रधान अंतरविरोध का प्रधान पहलू' कहा।

कॉ माओ ने कहा था किसी भी अंतरविरोध में अंतरविरोधी पहलुओं का विकास असमान होता है। कभी कभार वे संतुलन में लग सकते हैं, परंतु यह केवल अकाल्पनिक और सापेक्ष होता है, जबकि असमानता मूल होती है। दोनों अंतरविरोधी पहलुओं में एक प्रधान होगा और दूसरा गौण। प्रधान पहलू ही किसी अंतर्विरोध में नेतृत्वकारी भूमिका अदा करता है। किसी चीज की प्रकृति मुख्यतः अंतर्विरोध के प्रधान पहलू से निर्धारित होती है, जिस पहलू ने प्रधान स्थान ग्रहण किया है। अवसरवादी दर्शन के इस लाईन से दक्षिण की तरफ खिसक गये हैं, मार्टिन हिडेगर उनके गुरू हैं। उसी ने कहा था कि अस्तित्व (being) कुछ नहीं है सिर्फ भाषा में अभ्यास है। देरिदा ने कहा था कि अस्तित्व एक मिथ्य है जो भाषा ने बनाया है। इस तरह की समझदारी के साथ किसी के अस्तित्व के भीतर अंतर्विरोध और अस्तित्व के विकास की प्रक्रिया के चरणों के बारे में बात करने की जगह नहीं बची है।

अवसरवादियों द्वारा व्याख्यायित अंतर्विरोध के दर्शन पर बातचीत के बाद अब हम तीसरे बिंदु पर आते हैं यानि भाषा, शब्द, संकेतों आदि का सवाल। उत्तर आधुनिकतावादी ल्योटार्ड कहता है कि भाषा एक खेल बन जाता है जहाँ ज्यादा संसाधनों वाला व्यकि सच को निर्धारित करता है। देरिदा कहता है कि भाषा नियंत्रण का एक औजार है और इसे हिंसक श्रेणीबद्धता (violent hierarchy) कहता है। इससे निकलने के लिए देरिदा वियोजन करने की राय देता है यानि कि वे चीजें भी पढ़ना जो कोई लेखक कहना चाहते हों या ना कहना चाहता हों। वे बताते हैं कि ऐसा वे तब कर सकते हैं जब वे लेखक की मंशा के बारे में सवाल न करें क्योंकि देरिदा के हिसाब से लेखक मर चुका है। इस सिद्धांत ने उत्तर आधुनिक राजनीति को समर्थन प्रदान किया।

उन्होंने ऊपरी कमेटी की भाषा को वियोजित करना (deconstructing) शुरू कर दिया। भाषा के पीछे की मंशा या मकशद की परवाह किये बगैर, वे सांकेतिक अभिव्यक्ति के पीछे गए। यह उनकी अवसरवादी जरूरतों को संतुष्ट करता है। यहाँ तक कि फूको ने भी देरिदा की लेखनी को आतंकी प्रगतिविरोधवाद (terroristmobscurantism) बताया। फूको ने देरिदा के बारे में कहा है ''वह इतना अस्पष्ट लिखता है कि आप बता नहीं सकते वो क्या कहना चाहता है, प्रगतिविरोधी हिस्सा है और जब आप उसकी आलोचना करते हैं तो वह हमेशा बोलता है ''आप मुझे नहीं समझे, आप मूर्ख हो।'' यह उसका आतंकी हिस्सा है।'' देरिदा दर्शन के सोफिस्ट (sophist) स्कूल की सबसे पुरानी चाल को अपनाता है। इससे हम अवसरवादी खेमें में देरिदा के लिए प्यार को समझ सकते हैं। देरिदा का इस्तेमाल करके कोई व्यक्ति किसी भी तर्क को पलट सकता है और उसे शब्दों और संकेतों की अर्थहीन जुगलबंदी की तरफ ले जा सकता है। अवसरवादी इसे अपने खुद के फायदे के लिए इस्तेमाल करते हैं। वे इस हथियार के माध्यम से पार्टी की सही राजनीतिक लाईन पर हमला करते हैं। वे कहते हैं कि भाषा तानाशाहीपूर्ण है और इसलिए जो भी कहा जा रहा है उसका अर्थ खत्म हो जाता है।

चूंकि इन अवसरवादियों के साथ कई संवाद पत्रों के माध्यम से हुए हैं, हमारे कुछ साथी यह समझदारी बना लेते हैं कि पत्र व्यवहार ने मामले को पेचीदा बना दिया है। वे सोचते हैं कि पत्र-व्यवहार के कारण गलतफहमी पैदा हुई है जो केवल व्यक्तिगत मीटिंगों में ही सुलझाया जा सकता है। इस तरह की समझदारी में भी उत्तर आधुनिकता के लक्षण है। समस्या पत्र व्यवहार नहीं है। यह हम सभी जानते हैं कि दुनियाभर में कम्युनिस्ट आंदोलन के इतिहास ने पत्रों का सबसे अच्छा इस्तेमाल किया है आंदोलन का और उसमें जुड़े साथियों का मार्गदर्शन करने के लिए। समस्या अवसरवादियों की राजनीतिक लाईन में है, जिसकी सेवा में वे उत्तर आधुनिक भाषा का इस्तेमाल कर के पार्टी की राजनीतिक लाईन और नेतृत्व को निशाना बना रहे है।

एक और गम्भीर मामला जो हमारे समय के अवसरवादी उठा रहे हैं ढाँचे के सवाल से जुड़ा है। इस पर उनका मत कुछ और नहीं बल्कि मार्क्सवाद के भेष में उत्तर संरचनावादी (post structuralism) यह मानते हैं कि परंपरागत समाज में सत्ता केंद्रीयकृत थी और ढाँचा के अंदर व्यवस्थित थी। वे ढाँचा को उसकी अंर्तवस्तु में ताकतवर, विशिष्ट और अतः उत्पीड़क मानते हैं। इसके बरक्स वे व्यक्तिगत चयन और उग्र आजादी की मांग करते हैं। अतः वे किसी ढाँचे का निर्माण नहीं करते लेकिन उसपर हमला करते हैं ताकि उसे वियोजित कर सके। जब इसे कम्युनिस्ट व्यवहार में लागू किया जाता है। तो हमें ऐसे अवसरवादी मिलते हैं जो पार्टी मीटिंगें नहीं रखते, जो कोई नए ढाँचे नहीं बनाते और जो जानबूझकर ढाँचों को ढुलमूल रखते है। ऐसा करने से वे यह निश्चित करते हैं कि सत्ता पार्टी ढाँचे में केंद्रीयकृत न हो। और केवल राज्यसत्ता, शासक वर्ग की सत्ता ही एकमात्र सत्ता होगी जिसका केंद्रीयकरण होता रहेगा और जो सर्वव्यापी होगी जबकि सर्वहारा की सत्ता जो कम्युनिस्ट पार्टी के साथ है, उसे सड़ने दिया जाएगा। ऐसे में कम्युनिस्ट पार्टी की जगह पर व्यक्तिगत तानाशाहीपूर्ण मत रह जाता है, एक इंसान के अंदर की नौकरशाही, बिना किसी जिम्मेदारी या जवाबदेही के, जो अपने आप को हमेशा सही होने का दावा करता हैं। इस प्रक्रिया में एक व्यक्ति समूह की जगह ले लेता है। अतः हम देख सकते है कि कैसे उत्तर आधुनिकवाद कम्युनिस्ट आंदोलन के भीतर की बुर्जुआ राजनीतिक लाइन को मजबूत करता है।

इस श्रृंखला में आखिरी मामला उत्तर आधुनिकवादियों के 'जेंडर' और यौनिकता के सिद्धांत के बारे में है। इस सन्दर्भ में उत्तर आधुनिकवादियों का मशहूर नारा है ''ज्यादा सेक्स, ज्यादा आजादी'' इस नारे से ज्यादा स्पष्ट उनका मत कोई और चीज से नहीं समझ सकते। उत्तर आधुनिकवादी, खास तौर से फूको ने जेंडर और यौनिकता के विक्टोरियाई आधुनिक धारणा पर हमला किया। उसने जेंडर को एक सामाजिक संरचना कहा। बाद में कुख्यात क्वेयर सिद्धांत के लिए माने जाने वाली एक उत्तर आधुनिकवादी ने कहा कि 'जेंडर' एक 'प्रदर्शन' है और वह व्यक्तिगत अनुभवों के हिसाब से कोई भी आकार ले सकता है। जैविक शब्द 'सेक्स' की जगह 'जेंडर' शब्द का प्रयोग प्रगतिशील माना गया था। और सेक्स शब्द का इस्तेमाल जैविक नियतिवाद और आधुनिकता से जुड़ा है। जेंडर शब्द उत्तर आधुनिक दर्शन में बहाव और अनियमितता से जुड़ा है, जो नव-उदारवादी बाजार के विचार के लिए जगह देता है। व्यक्तिगत इच्छा के अनुसार अपना जेंडर बदल लेना आम बात बन गई। यहाँ भी व्यक्तिगत इच्छा और उग्र आजादी पर जोर दिया गया।

इससे समझा जा सकता है कि बटलर क्यों कहते रहते हैं कि हमें हमेशा अपने जेंडर पर सवाल करना चाहिए, उसपर संदेह करना चाहिए और उसे पुनः परिभाषित करना चाहिए। भौतिक सच को पूरी तरह से नकार दिया गया, केवल मिथ्य और अमूर्तिकरण ही बच गया। उत्तर आधुनिकवाद का सबसे आलोचनात्मक पहलू है तर्क पर हमला और साथ में ही भावनाओं, चाहतों, अनुभूतियों और खुशी को ज्यादा तरजीह देना। अपनी किताब 'जेंडर को परेशान करना' में वह क्वेयर के सिद्धांत को परिभाषित करने में उन सभी चीजों को शामिल कर लेती है जो मौजूदा सत्ता की संरचना को नष्ट करता है। क्वेयर एक अस्पष्ट शब्द है जिसमें उन सब चीजों को डाला जा सकता है जिसकी कल्पना बाजार कर सकता है या जो बाजार में लाया जा सकता है। लेकिन दक्षिणपंथी अवसरवादियों के कुछ तबकों को इससे कोई समस्या नहीं है। वे क्वेयर सिद्धांत को मार्क्सवाद का ही एक हिस्सा बताते हैं। हार्ड (Hardt) और नेगरी (Negri) जैसे कई अवसरवादी बुद्धिजीवियों ने यह बोलना शुरू कर दिया है कि आनंद (pleasure) उत्पादन शक्ति का हिस्सा है। अतः क्वेयर की परिभाषा और उसकी संकल्पना उत्पादन शक्तियों के लिए एक मुक्तिदायी सिद्धांत है। मार्क्सवाद का इतना अभद्रीकरण कभी नहीं किया गया था। शायद ही पहले कभी मार्क्सवाद की पकड़ जनता में इतनी कमजोर रही होगी जितना कि आज है।

आम चलन में पायी जाने वाली सेक्स और यौनिकता की उत्तर आधुनिक समझदारी से उलट हमारी पार्टी मानती है कि जेंडर या क्वेयर शब्द उत्तर आधुनिक, प्रायोजित, बाजार हेतु बुर्जुआ विचार है और इसलिए इसका विरोध होना चाहिए। उसकी जगह सेक्स शब्द का प्रयोग होना चाहिए जो सेक्स के जैविक और सामाजिक पहलुओं को दर्शाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इसके अलावा यह माना गया कि सेक्स में बदलाव केवल तभी माना जाएगा जब उसके पीछे कोई भौतिक परिस्थिति है जिसके कारण सेक्स बदलने की चाहत बनी। इसके बिना सेक्स बदलने की चाहत मुख्यतः बाजार द्वारा संचालित साम्राज्यवादी प्रायोजित उत्तर आधुनिक वैचारिक रूझान है। (सेक्स बदलने के सवाल पर हमारी पार्टी द्वारा तय मत की कमी के चलते हमारी पार्टी अपने सदस्यों को सेक्स बदलने की अनुमति नहीं देती है लेकिन जो मत हमने अभी रखा है वह जनता और कैडर के लिए एक आम स्टैंड है, यहीं हमारा मार्गदर्शक सिद्धांत रहेगा चाहे केंद्रीय कमेटी द्वारा सेक्स बदलने का अधिकार दे ही क्यों न दिया जाए।) इस दृढ़ स्टैंड के अलावा, पार्टी साम्राज्यवादी अराजक यौनिक पद्धतियों के खिलाफ संघर्ष में आगे बढ़ी है। पार्टी ने

यौनिक अवसरवाद को परिभाषित किया है। यौनिक अवसरवाद को यौनिक क्रिया में अवसरवाद कहा है, यौनिक संभोग बिना सर्वहारा की विचारधारा के एक यौनिक अवसरवाद स्वतःस्फूर्त, निम्न पूंजीपति, साम्राज्यवाद-संचालित, खुशी और उपभोग के उत्तर आधुनिक तर्क से संचालित होता है। उत्तर आधुनिकवादी बुद्धिजीवी इस तरह की यौनिक पद्धति को प्रोत्साहित करता है जबकि अवसरवादी इन पद्धतियों को पकड़े रहते हैं। क्योंकि जब राजनीति में घुमाव आता है तो जिंदगी के हर पहलू में घुमाव आता है। और हर घुमाव में उत्तर आधुनिकवाद की विचारधारा अवसरवादियों को पकड़ कर रखती है। वे एक साथ मार्च करते हैं और एक साथ ही गिरते हैं। कॉ मार्क्स, कॉ लेनिन, और कॉ माओ की विरासत वाली पार्टी के अंदर उत्तर आधुनिक अवसरवादियों के लिए कोई जगह नहीं है। पार्टी को बचाने के लिए उन्हें पार्टी से निकालना होगा।

निष्कर्ष

एक कम्युनिस्ट पार्टी के अंदर अवसरवाद एक राजनीतिक रूझान/भटकाव/लाइन के बतौर शासक वर्गीय विचारधारा की अभिव्यक्ति है। यह दुश्मन की गोली से भी ज्यादा खतरनाक है और इसको पार्टी से जड़ से उखाड़ फेंकने का तरीका है सक्रीय वैचारिक संघर्ष। हमें वर्ग संघर्ष के बारे में अपने विचारों पर पुनः विचार करने की जरूरत है। हमारे बहुत से साथियों में यह भ्रम है कि हथियारबंद संघर्ष ही वर्ग संघर्ष का तरीका है। यह बात सही है कि हथियारबंद संघर्ष वर्ग संघर्ष का सबसे उच्चतर तरीका है परंतु यदि हम वैचारिक मोर्चे पर उदार हो गए और इस मोर्चे पर संघर्ष को वर्ग संघर्ष का हिस्सा नहीं माना तब हम हथियारबंद मोर्चे पर संघर्ष हार जायेंगे। इस सच को शासक वर्ग से बेहतर और कोई नहीं समझता है इसलिए वो मनोवैज्ञानिक स्तर पर सबसे सक्रिय है। सर्वहारा वर्ग की विचारधारा पर हमला करने के लिए शासक वर्ग को उत्तर आधुनिकवाद के रूप में एक नया हथियार मिला है। यह हथियार बीसवीं सदी के अनुभवजन्य आलोचना से भी ज्यादा पैना है। इसको हराने के लिए हमें मालेमा की अपनी समझदारी को पैना करने की जरूरत है। यदि हम अपने पार्टी ढाँचों में उत्तर आधुनिक रूझानों को पकड़ लेंगे तो हम अवसरवादियों और अवसरवाद के रूझानों को कमजोर कर देंगें। केवल सक्रीय वैचारिक संघर्ष ही हमें इस संघर्ष में मदद कर सकता है ताकि हम कम्युनिस्ट आंदोलन के भीतर के उत्तर आधुनिक अवसरवादी रूझानों को जड़ से उखाड़ फैंके। हमें भौतिक और वैचारिक दोनों रूप से खत्म करने के लिए दुश्मन बहुत बडे स्तर पर अभियान लिया है। ऐसे समय मे हम कॉ. लेनिन को याद करते हैं जिन्होंने कहा था ‘‘हमारे खिलाफ, रूसी भूमिगत में छिपे समाजवादियों के छोटे समूहों के खिलाफ, एक सबसे ताकतवर आधुनिक राज्य की विशाल मशीन खड़ी है जो समाजवाद और जनवाद को खत्म करने लिए अपनी सभी ताकतें लगा रही है। हम आश्वस्त हैं कि अतं में हम इस पुलिसिया राज को खत्म कर देंगे, क्योंकि समाज के सभी विकासशील तबके जनवाद और समाजवाद के पक्ष में हैं, लेकिन सरकार के खिलाफ एक व्यवस्थित संघर्ष चलाने के लिए, हमें क्रांतिकारी संगठन, अनुशासन और भूमिगत काम की कार्यपद्धति को उत्तमता के सबसे ऊँचे स्तर तक उठाना होगा।‘‘ कॉ. लेनिन के ये शब्द मौजूदा समय में हमारे केंद्रीय कार्यभार को बताते हैं। मालेमा पर दृढ़ संकल्प के साथ, आओ अपने उज्जवल भविष्य की ओर कूच करें।